सम्पादकीय 2
उज्ज्वल भविष्य की राह देख रहे लोगों तक पहुँचा दीजिए दिव्य ज्योति के कुछ कण

शान्तिकुञ्ज समाचार 3
समाज के नवनिर्माण के लिए प्रेरित हो रही है नवयुग की तरुणाई

विश्व मंच : संयुक्त राष्ट्र संघ में आयोजित **वैश्विक नैतिकता मंच-2025** के मुख्य अतिथि थे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि
• **पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव** में भी मिला विशेष सम्मान 8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अक्टूबर 2025

वर्ष : 38, अंक : 09
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अक्टूबर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-13

संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए, अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

संसार में जितना कुछ सत्कार्य बन पड़ रहा है, उन सबके मूल में सत्प्रवृत्तियाँ ही काम करती हैं। भले या बुरे कार्य अनायास ही नहीं उपज पड़ते, उनके मूल में सद्विचारों और कुविचारों की जड़ जमी होती है। बीज जिस प्रकार समय पाकर अंकुरित होता और फलता-फूलता है, उसी प्रकार सत्प्रवृत्तियाँ भी अगणित प्रकार के पुण्य-परमार्थों के रूप में विकसित एवं परिलक्षित होती हैं।

मनुष्य मूलतः एक प्रकार का काला कुरूप लोहा मात्र है। सद्विचारों का पारस छूकर ही वह सोना बनता है। एक नगण्य तुच्छ प्राणी को मानवता का महान् गौरव दिला सकने की क्षमता मात्र सद्विचारों में है। जिसे यह सौभाग्य नहीं मिल सका, वह बेचारा क्यों कर अपने जीवन लक्ष्य को समझ सकेगा और क्यों कर उनके लिए कुछ प्रयत्न-पुरुषार्थ कर सकेगा।

सत्प्रवृत्तियों को मनुष्य के हृदय में उतार देने से बढ़कर और कोई महत्त्वपूर्ण सेवा कार्य इस संसार में नहीं हो सकता। यह कार्य अमीर-गरीब हर व्यक्ति के लिए सहज संभव है। व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में जितनी भी कठिनाईयाँ दिखाई पडती हैं, उनका एकमात्र कारण कुबुद्धि है। यदि मनुष्य अपनी आदतों को सुधार ले, स्वभाव को सही बना ले तथा विचार व कार्यों का ठीक तारतम्य बिठा ले, तो बाहर से उत्पन्न होती दीखने वाली सभी कठिनाइयाँ बात ही बात में हल हो सकती हैं।

संसार में परमार्थ और उपकार के अनेक कार्य हैं, उनकी सार्थकता उनकी आत्मा में, उसके पीछे निहित भावनाओं में है। सद्भावना रहित सत्कर्म भी केवल ढोंग मात्र बनकर रह जाते हैं। अनेक संस्थाएँ आज परमार्थ का आडंबर करके सिंह की खाल ओढ़े फिरने वाले श्रृंगाल का उपहासास्पद उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं, जिन्हें लोग आशंका और संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। प्राण रहित शरीर कितने ही सुंदर वस्त्र धारण किए हुए क्यों न हो, उसे कोई पसंद न करेगा, उससे किसी का कोई भला न होगा। इसी प्रकार सद्भावना रहित जो कुछ भी लोकहित, जनसेवा के प्रयास किये जायेंगे, वे भलाई नहीं, बुराई ही उत्पन्न करेंगे।

दानों में सर्वोत्तम दान ब्रह्मदान-ज्ञानदान को कहा जाता है। ज्ञान का अर्थ वह भावना और निष्ठा है, जो मनुष्य के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाती है। इस अमृत जल से सींचा जाने पर मुरझाता हुआ युग-मानस पुनः हरा-भरा, पुष्प-पल्लवों से परिपूर्ण बन सकता है। इसी महान् कार्य को परमार्थ कहा जा सकता है, जिसको पूरा करने के लिए परमात्मा ने मनुष्य को विशेष क्षमता, सत्ता और महत्ता प्रदान की है।

हमें परमार्थ कार्य को जीवन का एक नितांत आवश्यक एवं लोक-परलोक के लिए श्रेयस्कर कार्य मानना चाहिए और अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ और धन की पाँचों विभूतियों का अधिकाधिक भाग परमार्थ के लिए लगाना चाहिए। जिसके पास जो विभूति हो, उसे वह समाज में सद्विचारों को प्रतिष्ठित करने के लिए लगाये। समय, श्रम और पुरुषार्थ तो हर व्यक्ति लगा ही सकता है। ज्ञानवान अपनी सूझबूझ एवं मार्गदर्शन से अन्यों को प्रेरित कर सकते हैं। हर व्यक्ति न्यूनतम एक घंटा समय और एक दिन की आय सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए लगाने का क्रम बना ले, तो इतना बड़ा कार्य हो सकता है कि इतिहास में उसे स्वर्णाक्षरों में लिखा जाए।

मनोयोगयुक्त श्रम की सामर्थ्य

ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में मनुष्य को उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना माना जाता है, क्योंकि उसने मनुष्य को कल्पना संजोने के लिए मन, निर्णय के लिए बुद्धि तथा श्रम करने हेतु शरीर प्रदान किया है। यह सुनिश्चित तथ्य है कि मन और मस्तिष्क के समन्वय के साथ शरीर को जिस ओर कार्य करने में लगा दिया जायेगा, उस ओर चमत्कार हो जायेगा। संसार की प्रगति में मनोयोग का बड़ा गहरा हाथ रहा है। मनोयोगपूर्वक किये गये श्रम ने सदैव अच्छे परिणाम ही प्रस्तुत किये हैं।

आदि युग से लेकर वर्तमान वैज्ञानिक युग तक के परिवर्तनों पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि मनुष्य के मस्तिष्क ने इस कुरूप और बेडौल पृथ्वी को सजाने-सँवारने का

परिश्रमी और पुरुषार्थी बनें

कार्य बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से कर दिखाया है। कहाँ आदि युग का बर्बर, जंगली मनुष्य और कहाँ वर्तमान युग का सभ्य, सुशिक्षित मानव। निश्चय ही प्रगति के पथ पर मानव मस्तिष्क, मन की कल्पनाओं को लिए दौड़ता चला गया है और सम्पूर्ण धरा को दुल्हन की भाँति सजा डाला है।

विज्ञान के आविष्कारों ने मनुष्य के श्रम के साथ मनोयोग के समन्वय की महत्ता को सिद्ध कर दिया है। यदि मनुष्य जाति का वह वर्ग, जिसने अपने श्रम तथा बुद्धि से ये सभी साधन उपलब्ध कराये हैं, श्रम से कन्नी काटने लगे, तो आज की हमारी सुविधाएँ थोड़े समय पश्चात् नष्ट हो जायेंगी। एक छोटा-सा शोषित देश जापान अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को दमित होते देख स्थिर न रह सका। उस देश के निवासियों ने अपनी भावनाओं को ऊँचा उठाया और वे अपनी शक्ति के साथ-साथ पूर्ण मनोयोगपूर्वक अपने देश के विकास में लग गये। उन्होंने संसार के समक्ष अल्पकाल में ही प्रगति कर एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। उन्होंने बता दिया कि जिसने अपना तन-मन लगा दिया, वह तुलनात्मक रूप से अधिक लाभ उठा सका, जबकि जिसने श्रम से जी चुराया वह सौभाग्य के किनारों को छू भी न सका ।

सिद्धि-सफलता का अचूक मंत्र

संसार में कुछ व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उन्नति करते देखे जाते हैं। जन-सामान्य की धारणा उनके विषय में यह रहती है कि वे दैवी शक्ति प्राप्त व्यक्ति हैं। ऐसी दैवी सम्पदा उसी व्यक्ति विशेष को नहीं, वरन् प्रत्येक जन को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो सकती है। अंतर है मात्र उसको विकसित करने का, लगन का, निष्ठा का। ऐसा सोचने वाले लोग यदि स्वयं भी श्रम के साथ मनोयोग का समन्वय कर अपने उद्देश्य की प्राप्ति में संलग्न हो जायें तो सफलता उनके पैर चूमने लगेगी। जो लोग जीवन पर्यन्त श्रम की महत्ता को न समझ सकेंगे और आलस्य में ही अपना बहुमूल्य समय गँवाते रहेंगे, उन्हें हर क्षेत्र में निराश और खाली हाथ ही रहना पड़ेगा। श्रम से कतराने वाले लोग अपने भाग्य को कोसा करते हैं। वास्तव में यह दुर्भाग्य उस व्यक्ति की अकर्मण्यता का ही है। उसी ने उसकी प्रगति को अवरुद्ध कर दिया है।

याचना नहीं, पुरुषार्थ जरूरी

अवनतिग्रस्त व्यक्तियों के दुर्भाग्य की कहानी यह है कि वे अपने अमूल्य समय और अमूल्य श्रम की महत्ता को पहचान न सके। ऐसे लोग देवताओं से कार्य सिद्धि की भीख माँगा करते हैं। ये लोग बिना परिश्रम के बड़े कार्य सिद्ध कर लेना चाहते हैं। ये लोग फल प्राप्ति के लिए जड़ को सींचना नहीं चाहते। आशीर्वाद, वरदान चाहने वाले लोग इसी वर्ग में रखे जा सकते हैं। ऐसे लोगों को जान लेना चाहिए कि मनोयोगपूर्वक किये गये श्रम से बढ़कर सिद्धि प्रदायक अन्य कोई देवता नहीं। यदि सफलता चाहते हो तो श्रम करना ही होगा।

मानव की बाहुओं में निवास करने वाला श्रम देव अत्यन्त शक्तिशाली तथा उदार है, वह कभी निरर्थक नहीं जाता। छोटे-से-छोटे साधन वाला व्यक्ति भी यदि अपनी उन्नति हेतु कोई निश्चित कार्यक्रम बनाकर अपनी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ समय और श्रम की मात्रा बढ़ाता चले, तो प्रगति सुनिश्चित है। जहाँ आलस्य है, प्रमाद है, वहाँ जीवन की रसमयी धारा विषाक्त हो जाती है। ठीक इसके विपरीत मनोयोगपूर्वक कर्म करने वाले व्यक्ति को अपना जीवन स्वर्ग से भी अधिक सुखमय प्रतीत होने लगता है। जिस व्यक्ति के मन-प्राण में आलस रूपी जहर घुस गया, उसका तो ईश्वर ही रक्षक है। उसने अपनी बरबादी के साज-सामान स्वयं इकट्ठे कर लिए। उसके ऊपर कथित साढ़ेसाती नहीं, हमेशा-हमेशा का शनीचर चढ़ेगा और राहु का कुचक्र उसके मस्तक पर सदैव मंडराता रहेगा ।

हमें यह जानना चाहिए कि सबसे बड़ा सिद्ध मंत्र सुनिश्चित क्रम में समय, श्रम और पुरुषार्थ का उपयोग ही है। इस मंत्र को जिन्होंने जीवन में उतारा है, उन्हें सफलता कभी दूर नहीं दखाई दी और वे बड़ी सरलता से अपना उद्देश्य प्राप्त कर अग्रसर होते रहे।

सोच बदलेगी तो सफलता मिलेगी

हमें सुख-शान्ति, सन्तोष प्राप्त करना है तो खोजना होगा कि दूसरे सफल लोगों की सफलता का क्या रहस्य रहा है। क्या उनके शरीर की बनावट भिन्न थी? क्या उनकी परिस्थितियाँ भिन्न थीं या हमारे और उनके दृष्टिकोण में अन्तर है? जहाँ तक शरीर का प्रश्न है, परम-पिता परमेश्वर ने अपने सभी पुत्रों को समान अंग प्रदान किये हैं। परिस्थितियों के विषय में सोचें तो पायेंगे कि वे सफल व्यक्ति भी इसी समाज में रहते हैं, जिसमें हम रह रहे हैं। मात्र हमारा और उनका सोचने का दृष्टिकोण भिन्न है। उन्होंने श्रम से जी चुराने की बात कभी नहीं सोची और हम श्रम से बचने के रास्ते ढूंढ़ने में ही अपना समय गुजार देते हैं। वे श्रम के साथ मनोयोग का समन्वय कर लेते हैं, जबकि हममें लगन तथा निष्ठा का पूर्ण अभाव है। बस यही उनकी सफलता और सामान्यजन की असफलता का भेद है।

निष्ठा, लगन और दिलचस्पी से जो भी कार्य किया जायेगा, उसकी सफलता निश्चित है। जिन लोगों को अपने कार्यों में सफलता की आकांक्षा हो, उन्हें यही पथ अपनाना चाहिए। गौरव और सफलता अर्जित करने वाले व्यक्ति इसी रास्ते पर आगे बढ़े हैं। हमें भी यदि सफलता का गौरव अर्जित करना है तो यही मार्ग अपनाना होगा, परिश्रमी बनना होगा, जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना जानना होगा। हम जितने श्रम और मनोयोग से कार्य करेंगे, उतनी ही सफलता निश्चित है।

अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1976,
पृष्ठ 52 से संकलित-सम्पादित

उज्ज्वल भविष्य की राह देख रहे लोगों तक पहुँचा दीजिए दिव्य ज्योति के कुछ कण

यह कार्य हो जायेगा आसान, घर-घर पहुँचाकर प्रज्ञा अभियान

एक मार्मिक संस्मरण

गायत्री परिवार की युवा इकाई-डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) दिल्ली, मुखर्जी नगर क्षेत्र में प्रेरणाप्रद कक्षाएँ (मोटिवेशनल क्लासेस) एवं सृजनात्मक गतिविधियाँ चलाते हुए सैकड़ों युवाओं का उत्साहवर्धन कर रही है, उनका मनोबल बढ़ा रही है। इस क्षेत्र में पूरे देश से आकर विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा विद्यार्थियों को इनका लाभ मिल रहा है। इन कक्षाओं में परम पूज्य गुरुदेव एवं अन्य महापुरुषों के क्रान्तिकारी विचारों और बहुमूल्य सूत्रों के आधार पर विद्यार्थियों को जीवन की यथार्थता का बोध कराते हुए जीवन जीने की कला सिखाई जाती है। इसके साथ ही उनके सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराते हुए उनके सहयोग से साहित्य स्टॉल, बाल संस्कारशालाएँ, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम चलाये जाते हैं।

दिया दिल्ली के स्वयंसेवक महेन्द्र जी द्वारा गाँधी विहार में गुरुदेव का साहित्य स्टॉल लगाया जाता है, जहाँ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे बहुत सारे छात्र आकर साहित्य पढ़ते हैं। एक दिन सरिता नाम की एक युवती, निवासी वजीराबाद कुछ परेशान और चिंताग्रस्त थी, साहित्य स्टॉल पर आई और बहुत देर तक साहित्य देखती रही। फिर वह ₹200/- का साहित्य खरीद कर ले गई।

अगले दिन वह लड़की आई और महेन्द्र जी का पैर पकड़ कर रोने लगी। उसने कहा कि मैं कल रात को जहर खाना चाहती थी। मैंने जहर खरीद भी लिया था, लेकिन कल जब मैंने यह साहित्य पढ़ना शुरू किया तो ऐसा लगा कि कोई मेरे से बात कर रहा है। मैं देर रात तक इन पुस्तकों को पढ़ती रही। मेरे मन से आत्महत्या का विचार चला गया।

साहित्य स्टॉल संचालक महेन्द्र जी ने उस पुस्तक के बारे में पूछा तो सरिता ने बताया कि **'मनः स्थिति बदलें तो परिस्थिति बदले'** पुस्तक ने मेरे मन को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया। उसने कहा, ''मैं किसी लड़के से प्रेम करती थी और ब्रेकअप के बाद जीवन शून्य-सा हो गया था। तब मैंने आत्महत्या करने का मन बना लिया था, लेकिन इस पुस्तक ने मेरा जीवन बचा लिया। अब मुझे जीवन की नई दिशा मिली है।'' इन दिनों वह युवती बी.एड. करने के पश्चात् प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लगी हुई है।

अपनी सामर्थ्य को पहचानो

आज की हारी, थकी मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता है आत्मबल और मनोबल। दान एक पुनीत कार्य है, लेकिन धन-साधन के दान से कहीं अधिक आवश्यकता आज लोगों में आत्मविश्वास जगाने की है, उन्हें समर्थ और स्वावलम्बी बनाने की है। सच पूछा जाये तो अभाव साधनों का नहीं है, उस सद्ज्ञान का है जो हर परिस्थिति में व्यक्ति को प्रसन्न रहना और कठिन से कठिन परिस्थिति का आत्मबल और मनोबल के साथ सामना करना सिखाता है। यदि आत्मबल हो तो व्यक्ति उत्कृष्टता की ओर, महानता की ओर अग्रसर होता जाता है। आत्मबल और मनोबल विहीन लोग ही थके, हारे, निराश, हताश और पतनोन्मुख दिखाई देते हैं। यह आत्मबल, धैर्य, साहस, मनोबल न हो तो सम्पन्नता भी धरी की धरी रह जाती है। सद्बुद्धि और सद्ज्ञान ही वह सच्ची सम्पत्ति है, जो तमाम अभावों, कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने के लिए आवश्यक है।

अखण्ड ज्योति और प्रज्ञा अभियान

परम पूज्य गुरुदेव ने समाज के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देने वाला अकूत साहित्य रचा है। इसके अलावा उनके द्वारा हर माह भेजी जाने वाली पत्रिका अखण्ड ज्योति ने करोड़ों लोगों का जीवन बदला है। यह ज्ञानवर्धन करने वाली पत्रिका नहीं, उनकी प्राण चेतना की संवाहक वह पाती है, जिसमें हर व्यक्ति के लिए सटीक मार्गदर्शन है। अनेक अखण्ड ज्योति के पाठकों का अनुभव है कि जब भी उनके मन में कोई दुविधा होती है, जिज्ञासाएँ उठती हैं, प्रश्न उठते हैं तो उनका समाधान उन्हें अखण्ड ज्योति पत्रिका में मिल जाता है।

इस वर्ष पाक्षिक प्रज्ञा अभियान ने भी मिशन को विस्तार देने में विशेष भूमिका निभाई है। हमारे परिजन केवल प्रज्ञा अभियान के सदस्य ही नहीं बना रहे, अपितु विभिन्न कार्यक्रमों में, संगोष्ठियों में, पर्व-त्यौहारों पर, जन्मदिवस-विवाहदिवस जैसे शुभ अवसरों पर बड़ी संख्या में इसे वितरित करने में लगे हैं। जहाँ 24 से लेकर 108 और 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ हो रहे हैं, वहाँ **'जितने कुण्ड, उतने गाँव और जितने गाँव उन सबमें 25-25 प्रज्ञा अभियान'** का उत्साहभरा आन्दोलन चल पड़ा है। इसके क्रांतिकारी परिणाम भी देखे जा रहे हैं, जिससे लाखों लोगों तक परम पूज्य गुरुदेव के विचार और मिशन की सक्रियता के समाचार पहुँचाने में मदद मिल रही है। मध्य प्रदेश और राजस्थान प्रान्त में इसकी उपयोगिता को समझते हुए पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के विशेष प्रांतीय संस्करण आरंभ हो गए हैं, छत्तीसगढ़ भी इस दिशा में बड़ी तेजी से अग्रसर हैं।

प्रज्ञा अभियान समग्र है, शानदार है

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान विचार क्रान्ति का सबसे सुगम, सस्ता और प्रभावशाली माध्यम है। यह परम पूज्य गुरुदेव के विचार, अखिल विश्व गायत्री परिवार की सक्रियता के समाचार और भावी सक्रियता के लिए मार्गदशक है। आज के मँहगाई के युग में भी लोग बड़ी आसानी से इसकी 50-100 प्रतियाँ वितरित कर सकते हैं। यह युगशक्ति गायत्री की उपासना से बदलते व्यक्तित्व और समाज को दरशाता है।

पाक्षिक अपने हर कार्यकर्त्ता की आवाज है। हर व्यक्ति के पास लोगों को मिशन को समझाने की, इसके विराट स्वरूप को प्रस्तुत करने की कला नहीं होती। प्रज्ञा अभियान के सहारे लोगों को बड़ी सरलता से मिशन का परिचय दिया जा सकता है।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

विशिष्ट अवसर, दुर्लभ सौभाग्य

यह जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारंभ की उल्लासभरी, विशिष्ट सौभाग्यदायी मंगलवेला है। जन्मशताब्दी की ज्योति कलश यात्राओं ने गाँव-गाँव, घर-घर तक अखण्ड ज्योति की दिव्य चेतना, परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी को पहुँचाया है। आस्था की यह ज्योति अखण्ड रहे, प्रचण्ड होती चली जाये, इसके लिए परम पूज्य गुरुदेव के विचार और मिशन को लोगों तक निरंतर पहुँचाते रहना आवश्यक हो जाता है। लोहे और सोने को अभीष्ट आकार देने के लिए उस पर बार-बार चोट करने की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार समय की माँग के अनुरूप समाज के हर व्यक्ति का युग निर्माण आन्दोलन में सहयोग मिलने लगे, इसके लिए उन्हें पूज्य गुरुदेव के विचारों से निरंतर जोड़े रखना आवश्यक हो जाता है। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से यह कार्य सरल हो जाता है। जैसे-जैसे लोगों में श्रद्धा और विश्वास बढ़ेगा, वैसे-वैसे उन्हें अखण्ड ज्योति का सदस्य बनाना, युगशक्ति गायत्री की उपासना-साधना के लिए सहमत करना और युग निर्माण आन्दोलन का समर्थ सहयोगी बनाना सरल होता जायेगा।

चूँकि नवम्बर, दिसंबर माह पत्रिकाओं की सदस्यता का नवीनीकरण कराने और नए सदस्य बनाने का समय होता है, अतः इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा किए गए ज्ञानयज्ञ के आह्वान पर पूरी गंभीरता के साथ चिंतन-मनन करना चाहिए। वे सदैव हर वर्ष 1 से 5 और 5 से 25 के क्रम में पत्रिकाओं की सदस्यता का विस्तार करने का आह्वान अपने बच्चों से करते रहे हैं। हमें उनकी इस अपेक्षा पर संकल्पपूर्वक खरा उतरना चाहिए।

जितने कुण्ड-उतने गाँव, हर गाँव में पहुँचें 25 प्रज्ञा अभियान

प्रज्ञा अभियान एवं मिशन की अन्य पत्रिकाओं की सदस्यता को हमारी सक्रियता का मापदण्ड माना जा सकता है। इस दृष्टि से जहाँ भी बड़े यज्ञ हो रहे हैं, वहाँ 'जितने कुण्ड, उतने गाँव और जितने गाँव उन सब में 25-25 प्रज्ञा अभियान' का लक्ष्य संकल्पपूर्वक पूरा करना चाहिए। हमारा हर प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल न्यूनतम 25-25 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाये ही। संगठन की दृष्टि से हर जिले में न्यूनतम 1000 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचने ही चाहिए। शक्तिपीठों को अपने कार्यक्षेत्र के अनुसार अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेने चाहिए। जहाँ गुरुकृपा से हमारे बड़े-बड़े आयोजन और निर्माण कार्य सरलता से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं, वहाँ परम पूज्य गुरुदेव की इस आकांक्षा को पूरा करना कठिन नहीं हैं, आवश्यकता इसके सदुपयोग के लिए प्रत्येक को संकल्प एवं साहसपूर्वक आगे आने की है।

नवयुग की संरचना के लिए परम पूज्य गुरुदेव की प्राण चेतना की दिव्य धारा और उनके क्रान्तिकारी विचारों में विश्व मानवता के कल्याण का सुनिश्चित विधान निहित है। युग निर्माण सत्संकल्प का एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण सूत्र है-**संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए हम अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।** इस कसौटी पर हम खरे उतरते हुए हर व्यक्ति को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते चलें। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान इसका अत्यंत सरल, सुगम माध्यम है।

जन्मशताब्दी वर्ष की हलचल

राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ

दीपावली के बाद से पूरे देश में केन्द्रीय टोलियों द्वारा संचालित कार्यक्रमों की शृंखला आरंभ हो गई है। जन्मशताब्दी वर्ष के विशिष्ट समारोहों को अभूतपूर्व सफलता दिलाने के लिए पिछले लगभग एक-डेढ़ वर्ष से 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' जैसे जनसंपर्क अभियान, नशामुक्त भारत अभियान, ज्योति कलश यात्राएँ आदि कई कार्यक्रम चलाए गए हैं। देश-विदेश में एक नई चेतना का अभ्युदय हुआ है।

इन दिनों **राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों** की शृंखला चल रही है। इसके अंतर्गत 24, 51, 108 और 251 कुण्डीय गायत्री यज्ञ आयोजित हो रहे हैं, जिन्हें सम्पन्न कराने के लिए 30 केन्द्रीय टोलियाँ पूरे देश में सक्रिय हैं। जनवरी में बसंत पंचमी से जन्मशताब्दी समारोह की कार्यक्रम शृंखला का शुभारंभ हो जायेगा। इससे पूर्व देश में जगह-जगह युवा सम्मेलन, कन्या/किशोर कौशल एवं नारी सशक्तीकरण सम्मेलन तथा तरह-तरह के कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हो रहा है।

आगामी दिसम्बर माह तक लगभग 300 कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित होंगे। हर जाग्रत् आत्मा को युगयज्ञ में भागीदारी की प्रेरणा, आमंत्रण और अवसर इन कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त हो, यही इन कार्यक्रमों का प्रमुख लक्ष्य है। देश के करोड़ों लोगों की साधना और सृजन चेतना के प्रभाव से ऋषियुग्म के संकल्प की सिद्धि सुनिश्चित है। राष्ट्र, संस्कृति और समूची मानवता शान्ति, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो, मानवमात्र को सद्बुद्धि प्राप्त हो, ऐसे प्रयास इन कार्यक्रमों में किये जाने हैं।

जन्मशताब्दी समारोह

बसंत पर्व 2026 से जन्मशताब्दी समारोह शृंखला का शुभारंभ होने जा रहा है। प्रथम कार्यक्रम 21, 22 एवं 23 जनवरी 2026 को हरिद्वार में आयोजित होगा। यह आगामी विराट कार्यक्रमों के आयोजनों की सफलता के लिए विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में सक्षम प्राणवान कार्यकर्त्ताओं का शपथ समारोह एवं प्रशिक्षण स्तर का कार्यक्रम होगा। इसमें पूरे देश में संगठनात्मक स्तर की विविध जिम्मेदारियाँ निभा रहे और शान्तिकुञ्ज द्वारा चयनित कार्यकर्त्ता ही भाग लेंगे।

विशेष दिशा-निर्देश

- अब पूरे देश में वातावरण जन्मशताब्दीमय हो जाये, ऐसे प्रयास हमें करने हैं।
- प्रत्येक शक्तिपीठ / प्रज्ञा संस्थानों में जन्मशताब्दी वर्ष का बैनर लग ही जाना चाहिए।
- प्रज्ञा संस्थानों के प्रत्येक कार्यालय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों पर युग निर्माण सत्संकल्प के बड़े आकार के चित्र लगाये जाने चाहिए। इनके सामूहिक पठन का नियमित क्रम चलाना हर परिजन, प्रज्ञा संस्थान का नैतिक कर्त्तव्य है।

नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए आन्दोलन

50 ग्रामीणों ने लिया नशा छोड़ने का संकल्प

मुजगहन। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार मुजगहन के द्वारा गाँधी जयंती के पावन अवसर पर नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत प्रभात फेरी निकाली गई। ग्रामवासियों ने ढोल मजीरे के साथ गाँधी जी के प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम' का गायन करते हुए पूरे गाँव का भ्रमण किया। तत्पश्चात् गाँधी चौक पर पहुँचकर समस्त ग्रामवासियों ने गाँधी जी एवं शास्त्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर उपस्थित गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने लोगों को संबोधित करते हुए ग्राम मुजगहन को पूर्णतः नशा मुक्त गाँव बनाने की बात कही और सभी को नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि

नशामुक्ति का संकल्प ले रहे ग्रामीण

नशे से तन, मन और धन तीनों का नाश होता है।

50 ग्रामीणों ने आजीवन नशे के त्याग का संकल्प लिया। नशा छोड़ने वालों में ग्राम सरपंच होमेश्वर साहू, उप सरपंच जतिन साहू, ग्राम पटेल भुवन साहू, पूर्व सरपंच अघनू राम साहू सहित अनेक ग्रामवासी शामिल थे।

विजयादशमी पर्व पर 'नशासुर दहन'

नशासुर का दहन तथा नशामुक्त व आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प लेते परिजन

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में शारदीय नवरात्र के समापन एवं विजयादशमी के शुभ अवसर पर 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ में सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का संकल्प लिया गया। तदनुसार युवा प्रकोष्ठ के द्वारा सायंकाल 'रावण दहन' के स्थान पर 'नशासुर दहन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम स्थल पर नशा मुक्ति प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें नशे से होने वाली शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक हानियों तथा उससे बचाव के उपायों को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया।

श्री राजेश पटेल एवं डॉ. दयानंद समेले ने सभी को 'नशामुक्त भारत' एवं 'आत्मनिर्भर भारत' निर्माण के संकल्प के साथ स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की शपथ दिलाई।

देश के दिल में बदल रहा है युवाओं का मानस

प्रबुद्ध युवाओं ने गाँधी जयंती पर निकाली नशा मुक्ति रैली

मुखर्जी नगर। दिल्ली

दीया की दिल्ली शाखा द्वारा गाँधी जयंती के अवसर पर 'स्वस्थ युवा-सशक्त राष्ट्र' के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए दिल्ली के मुखर्जी नगर क्षेत्र में नशामुक्ति जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। यह रैली गाँधी विहार, एफ ब्लॉक से शुरू होकर युवा चेतना केन्द्र, मुखर्जी नगर पर समाप्त हुई। स्थानीय गलियों और मोहल्लों से निकलती हुई रैली के द्वारा विशेष तौर पर नवयुवकों में नशामुक्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया।

युवा चेतना केन्द्र पर सैकड़ों युवा एकत्रित हुए, जहाँ दीया दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य मनीष भैया ने मादक द्रव्यों के सेवन का त्याग करने के लिए दृढ़ संकल्पित होने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में उपस्थित 150 युवाओं ने आजीवन नशा छोड़ने तथा दस अन्य साथियों को भी नशा छोड़ने में मदद करने का संकल्प लिया।

व्यसनमुक्त भारत अभियान एवं ग्राम तीर्थयात्रा सप्ताह

जमशेदपुर। झारखंड

नवयुगदल एवं प्रज्ञा महिला मण्डल टाटानगर ने गाँधी जयंती के अवसर पर नगर के अति व्यस्त क्षेत्र साकची में नशामुक्ति रैली का आयोजन किया। हाथों में नशे के दुष्प्रभाव से हो रहे सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक नुकसान को दर्शाते पोस्टर्स एवं बैनर्स लिए हुए बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने रैली में भाग लिया। यह रैली नगर में नवचेतना जगाने में सफल रही।

रैली के समापन स्थल पर एक सभा का आयोजन किया गया, जहाँ सभी को नशे की हानियों से अवगत कराने के लिए पेम्फलेट वितरित किए गए। सभी ने नशा मुक्त समाज के निर्माण हेतु प्रदेश सरकार से भी सहयोग के लिए निवेदन किया। इस कार्य के लिए समाज के प्रबुद्ध वर्ग को भी शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

टाटानगर की रैली में दिखाई देता परिजनों का उत्साह

बंदियों को दिया संदेश

व्यसन से बचें, सृजन में लगें

जतारा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार, जतारा की युवा इकाई द्वारा उपजेल में **'व्यसन से बचें, सृजन में लगें'** के मूल उद्देश्य को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 65 से 70 बंदी भाइयों ने भाग लिया। कार्यशाला के प्रथम चरण में प्रतिभागी बंदियों को व्यसन की लत से छुटकारा दिलाने के टिप्स दिए गए। गायत्री परिवार के युवा मदन समेले ने बंदियों को संबोधित करते हुए नशे के गंभीर दुष्प्रभावों को खत्म करने की बात कही तथा बंदियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि 'नशे से दूरी, है जरूरी' एक सामाजिक अभियान है। नशामुक्त तथा स्वस्थ समाज का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है तथा पूर्णतया नशा मुक्त भारत का निर्माण अंतिम उद्देश्य है।

इस अवसर पर गायत्री परिवार के विनोद साहू और जे.पी. प्रजापति जी ने भी प्रेरणाप्रद विचार प्रस्तुत करते हुए बंदियों को अपने जीवन को ऊँचा उठाने के लिए गायत्री उपासना की प्रेरणा दी और उसका विधान समझाया। जेलर श्री राजकिशोर गुर्जर ने कहा कि नशे की लत से प्रभावित व्यक्ति नशे की पूर्ति के लिए अपराध, चोरी और डकैती की ओर बढ़ता चला जाता है, जिससे समाज में अपराध और तनाव बढ़ता है। उन्होंने गायत्री परिवार के इस प्रकार के प्रयासों के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

गाँव को व्यसन व प्लास्टिक मुक्त करने के लिए उठाये कदम

सलसलाई, शाजापुर। मध्य प्रदेश

प्रज्ञा मण्डल, सलसलाई द्वारा 12 अक्टूबर को 99 घरों में एक ही दिन एक ही समय पर गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये गये। यज्ञ से पूर्व यज्ञाचार्यों, स्थानीय परिजनों एवं ग्रामीणों के द्वारा व्यसन मुक्ति जनजागरण रैली निकाली गई। इस अवसर पर पूरे गाँव को नशामुक्त बनाने के लिए सभी ने सामूहिक संकल्प लिए।

प्रज्ञा मण्डल, सलसलाई के द्वारा इस अवसर पर गाँव में होने वाले प्रत्येक आयोजन को प्लास्टिक मुक्त करने के लिए जागरूकता अभियान चलाने का संकल्प भी लिया गया। परिजनों ने कहा कि इसके लिए ग्रामवासियों के सहयोग से प्लास्टिक के डिस्पोज़ेबल सामान का स्थायी समाधान निकालेंगे। श्रीमती चंद्रकला मेवाड़ा ने प्लास्टिक मुक्त कार्यक्रमों के आयोजन के लिए स्टील के 100 ग्लास उपलब्ध कराने की घोषणा की।

सलसलाई में निकली विशाल जनजागरण यात्रा

नवयुग के प्रेरणादीप

अब बच्चे चर्च में नहीं जाते, कहते हैं, हम सनातनी हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती

सेवा निवृत्त शिक्षिका, श्रीविजयपुरम, अंडमान निकोबार

श्रीमती डी. सत्यावती जी के नेतृत्व में अंडमान निकोबार के मुख्यालय श्रीविजयपुरम (पूर्व का नाम पोर्ट ब्लेअर) और आसपास के क्षेत्र में वंदना सिंह आदि के भरपूर सहयोग से विगत 3-4 वर्षों से कई बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं। इनमें वहाँ के गरीब वनवासी परिवारों के 150 से अधिक बच्चे आते हैं। श्रीराम बाल संस्कार शाला, हनुमान बाल संस्कार शाला, विवेकानन्द बाल संस्कार शाला, वाल्मीकि बाल संस्कार शाला, विश्वामित्र बाल संस्कार शाला आदि नामों से चलने वाली इन बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से वनवासी बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व विकास की विभिन्न गतिविधियों के साथ उन्हें अपनी धर्म, संस्कृति, इतिहास, ऋषि-महापुरुषों के त्याग-बलिदान से परिचित कराया जा रहा है। इन गतिविधियों का वनवासी समाज पर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ा है। बच्चों के रहन-सहन, साफ-सफाई, संस्कारों ने उनके परिवारीजनों को भी प्रभावित किया है। जब भी यज्ञ या गायत्री परिवार का कोई कार्यक्रम होता है तो वनवासी लोग बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ उसमें भाग लेने आ जाते हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती हाल ही में सेवानिवृत्त हुई शिक्षिका हैं। वे सन् 2014 में आयोजित एक पुस्तक मेले के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के संपर्क में आई। अगले वर्ष वहाँ पहुँची शान्तिकुञ्ज की टोली के संदेश से वे इतना प्रभावित हुईं कि फिर उन्होंने अपना जीवन ही समाज के नवनिर्माण के लिए समर्पित कर दिया।

वनवासियों का धर्मांतरण अंडमान निकोबार की बड़ी समस्या है। श्रीमती डी. सत्यावती जी ने वनवासियों को इससे बचाने के लिए अथक परिश्रम किया है। उन्होंने बताया कि बच्चे तरह-तरह के प्रलोभनों में आकर चर्च में चले जाया करते थे। उन्होंने चर्च के समय में ही बाल संस्कार शाला की आकर्षक गतिविधियाँ आरंभ कर दीं और उन बच्चों को उनकी धर्म-संस्कृति का बोध कराया। अब वे बच्चे चर्च नहीं जाते। कोई बुलाता है तो वे कहते हैं हम सनातनी हैं। वे अपने जन्मदिन दीपयज्ञ से मनाते हैं, केक नहीं काटते। जब भी यज्ञ होता है तो उनका पूरा परिवार और अड़ोसी-पड़ोसी पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ यज्ञ में भाग लेने आते हैं। वे गायत्री उपासना करते हैं, मंत्रलेखन करते हैं और उन्हें जो सद्गुण, संस्कार बताये जाते हैं, उनको अपनाने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने सन् 2016 में आयोजित 51 कुण्डीय यज्ञ के आयोजन में, जिसमें श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी भी पहुँचे थे, बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अगले वर्ष से वे अनवरत शान्तिकुञ्ज आकर युगतीर्थ की ऊर्जा और प्रेरणाओं का अवगाहन करती रही हैं। वे बताती हैं कि हर दो माह में एक बार 11 कुण्डीय यज्ञ और हर 15 दिनों में 5-5 कुण्डीय यज्ञों के आयोजन उनके द्वारा किये जाते हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती जी के साथ हनुमान और वाल्मीकि बाल संस्कार शालाओं के बच्चे

151 युवाओं ने रक्तदान किया

जमशेदपुर। झारखण्ड

नवयुगदल एवं प्रज्ञा महिला मण्डल के तत्त्वावधान में ब्लड बैंक, जमशेदपुर में 5 अक्टूबर को 61वें रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 151 रक्तदाताओं द्वारा 151 यूनिट रक्तदान दिया गया। युवा कार्यकर्त्ताओं के उत्साहवर्धन हेतु विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी श्री अमरप्रीत सिंह काले, श्री शिवशंकर सिंह, विधायिका श्रीमती पूर्णिमा साहू, श्री राजकुमार सिंह, श्री दिनेश कुमार, श्री कुणाल शारंगी, श्री अजय पाण्डेय, जिला परिषद् उपाध्यक्ष श्री पंकज सिन्हा उपस्थित थे।

रक्तदान कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री महायज्ञ से हुआ। श्री ताराचंद अग्रवाल, प्रज्ञा महिला मण्डल की अध्यक्षा बहन जसवीर कौर जी एवं प्रांतीय युवा समन्वयक श्री संतोष कुमार ने सभी अतिथियों, रक्तदानदाताओं तथा ब्लड बैंक की टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

तपोभूमि, मथुरा में प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

श्रेष्ठ, संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण के लिए चल रहा है क्रान्तिकारी अभियान

गायत्री तपोभूमि, मथुरा। उत्तर प्रदेश

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में दिनांक 2 और 3 अक्टूबर 2025 को आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी के अंतर्गत, उत्तरप्रदेश के प्रतिभागियों के लिए प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। जन्म से पूर्व ही भावी पीढ़ी को उच्च संस्कार देने के लिए समर्पित प्रशिक्षकों को तैयार करना इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य था। इस कार्यशाला में आँवलखेड़ा, नजीबाबाद, वाराणसी से लगभग 200 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। मथुरा के अनेक चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मी भी इसमें सम्मिलित हुए।

आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी एवं आदरणीया श्रीमती निर्मला देवी जी (भाभी माँ) ने दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सुश्री मृणालिनी जी ने स्वागत उद्बोधन देते हुए गुरुदेव के विचारों में गर्भ संस्कार का महत्त्व समझाया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी उत्तरप्रदेश की प्रांतीय संयोजिका डॉ. संगीता सारस्वत जी ने गर्भ के ज्ञान-विज्ञान की विस्तृत जानकारी दी। प्रांतीय सहसंयोजिका श्रीमती प्रज्ञा सक्सेना जी ने ऑनलाइन चल रही 'माँ की पाठशाला' और शिशु से 'गर्भसंवाद' पर प्रकाश डाला। श्रीमती पूजा द्विवेदी जी ने गर्भवती के लिए संतुलित, सात्विक और संस्कारित आहार के विषय तथा परिवार कल्याण महानिदेशालय से प्राप्त आदेश के उपरांत सामुदायिक और प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों पर किस प्रकार जाएँ, और क्या करें- विषय को स्पष्ट किया। श्रीमती अर्चना वर्मा जी ने गर्भावस्था में योगासन, प्राणायाम, ध्यान तथा श्रीमती नीरू तिवारी जी ने गर्भवती की आदर्श दिनचर्या का महत्व को समझाया।

कार्यक्रम में कई गर्भवती बहिनें भी उपस्थित रहीं। श्रीमती क्षमा चौधरी जी, श्रीमती सोमलता सिंह एवं नीतू पाराशर जी ने उनका गर्भ संस्कार करवाया। संस्कार कराने वाली बहिनों के शब्दों में उनके लिये यह अद्भुत अनुभव था। उन्होंने अपने परिवार के अन्य संस्कारों को भी गायत्री परिवार के माध्यम से कराने का मन बनाया।

सामूहिक संकल्प लिये गए

भावी पीढ़ी के इस धरती पर आने से पूर्व ही हम उन्हें गढ़ने के लिए ज्यादा से ज्यादा गर्भवतियों से जनसंपर्क करेंगे, उनके 9 माह का पूरा उपयोग करने का प्रयास करेंगे और अन्य सभी को जागरूक करते रहेंगे, ताकि परम पूज्य गुरुदेव का स्वप्न 'मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण' को शीघ्र ही साकार रूप दे सकें।

प्रशिक्षणार्थियों को उपरोक्त संकल्प और प्रेरणाएँ देते हुए आदरणीया निर्मला देवी जी ने सभी को स्नेहसिक्त भावपूर्ण विदाई दी।

इससे पूर्व कार्यशाला के अंतिम दिन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे परिजनों ने अपने जिले के कार्य एवं प्रगति विवरण प्रस्तुत किये। तपोभूमि के व्यवस्थापक श्री ईश्वरशरण पाण्डेय, श्री बी.पी. तिवारी और फिरोजाबाद से श्रीमती क्षमा चौधरी, आगरा से श्री मोहकम सिंह का कार्यशाला के सुचारू संचालन में विशेष योगदान रहा।

आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी, श्रीमती निर्मला देवी जी एवं अन्य गणमान्य शिविर का उद्घाटन करते हुए

निरंतर चलेगा प्रशिक्षण का क्रम

प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में 10 टोलियों का गठन

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

प्रसादपुर, पूरनपुर में संचालित माता भगवती देवी गौशाला में 6 से 9 अक्टूबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इसे शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से पहुँची श्री त्रिलोचन साहू एवं भास्कर तिवारी की टोली ने सम्पन्न कराया। प्रशिक्षणोपरांत 10 टोलियों का गठन किया गया, जो अगले दिनों स्थानीय लोगों को संभाषण, ढपली, कर्मकाण्ड, संस्कार आदि का प्रशिक्षण देंगी।

ज़ोन समन्वयक श्री डी.पी. सिंह जी ने माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर को ज़ोन स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र घोषित करते हुए कहा कि अब इस स्थान पर हर तीन महीने के अंतराल पर ज़ोन स्तरीय प्रशिक्षण सत्र चलाये जाने की योजना है।

शिविर के प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षुगण

इस अवसर पर उपज़ोन समन्वयक श्री अजयवीर सिंह ने वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर ज्योति कलश यात्रा के संदर्भ में कार्ययोजना प्रस्तुत की। गौशाला के व्यवस्थापक श्री अनन्तराम पालिया ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

प्रांतीय संगोष्ठी

कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

बेंगलुरु। कर्नाटक

गायत्री चेतना केन्द्र बेंगलुरू में नवरात्र साधना अनुष्ठान के पश्चात् दक्षिण भारत प्रकोष्ठ के समन्वयक श्री नरेन्द्र ठाकुर जी की अध्यक्षता में प्रांत स्तरीय गोष्ठी हुई। इसमें उन्होंने 'चलो गुरुदेव के सपने सजाने की शपथ ले लें' का भाव जगाते हुए सभी से आह्वान किया कि अपने क्षेत्र का कोई भी निवासी ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल से वंचित न रह जाए, यह हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। इस अवसर पर राजपुरोहित समाज के पूर्ण समर्पित सेवाभावी परिजनों का तिलक लगाकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अंत में दिव्य ज्योति कलश का पूजन कर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए गुरुकार्य में और अधिक लगन और गति के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया गया।

लंदन में दिव्य ज्योति कलश का भव्य स्वागत हुआ

युनाइटेड किंग्डम

अगस्त माह में शान्तिकुञ्ज से श्री शान्तिलाल पटेल एवं डॉ. संतोष नामदेव जी की टोली दिव्य जन्मशताब्दी ज्योति कलश लेकर युनाइटेड किंग्डम पहुँची, जहाँ गायत्री परिजनों ने पूर्ण श्रद्धा एवं उत्साह के साथ उसका स्वागत किया।

यू.के. में शान्तिकुञ्ज की टोली के लगभग एक माह के प्रवास में लेस्टर, एडग्वेयर, क्रॉले, क्रॉयडन, कॉर्बी, न्यू मैनर फार्म, मॉल्टन, नॉर्थम्प्टन, ग्रीनविच, बर्मिंघम, कोवेंट्री, हिंकले, लीसेस्टर इत्यादि स्थानों पर भव्य स्वागत समारोह आयोजित हुए। सभी स्थानों पर घरों एवं स्थानीय हिन्दू मन्दिरों में यज्ञ, दीपयज्ञ, विभिन्न संस्कार, गोष्ठी के माध्यम से सैकड़ों श्रद्धालुओं को जन्मशताब्दी वर्ष का संदेश और नवयुग सृजन के इस महान अनुष्ठान में भागीदारी का आमंत्रण दिया गया। इन कार्यक्रमों में ब्रिटिश मूल के कई परिजनों ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया।

प्रत्येक कार्यक्रम में युग निर्माण सत्संकल्प पाठ का प्रचलन प्रारंभ करने पर श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान आकर्षित किया गया।

लेस्टर : गायत्री चेतना केन्द्र लेस्टर में सत्यनारायण कथा, शिवाभिषेक और रक्षाबंधन-श्रावणी के कार्यक्रम प्रमुख थे। रक्षाबंधन के दिन स्नेहसलिला श्रद्धेया जीजी की ओर से भेजे गए रक्षासूत्र बाँधकर कार्यकर्त्ता भावविभोर हो गए। 10 अगस्त को गायत्री चेतना केन्द्र का वार्षिकोत्सव बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर परिजनों ने पूज्य गुरुदेव के विचारों को घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प लिया। लेस्टर में सक्रिय परिजन श्री दयाराम जी के निधन पर उन्हें गुरुधाम शांतिकुंज की ओर से श्रद्धांजलि भी दी।

एडग्वेयर के दक्षिण भारतीय हिन्दू मन्दिर में आयोजित पंच कुण्डीय यज्ञ में 150 से अधिक लोगों ने भाग लिया, ज्योति कलश का स्वागत किया। क्रॉयडन में 25 घरों में कार्यक्रम हुए।

शान्तिकुञ्ज में 1 जनवरी 2026 से आरंभ हो रहा है इलेक्ट्रीशियन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

आवेदन कीजिए **अवधि छः माह**

शान्तिकुञ्ज में युवा स्वावलम्बन के कार्यक्रमों के अंतर्गत छः माह का इलैक्ट्रिशियन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इसमें 3 माह की सैद्धांतिक (Theory) पढ़ाई की जाती है और अगले 3 माह प्रायोगिक (Practical) प्रशिक्षण का अनिवार्य क्रम होता है। इस पाठ्यक्रम का अगला सत्र 1 जनवरी 2026 से प्रारंभ हो रहा है।

अर्हताएँ : केवल वही अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं, जो

- कम से कम 10वीं पास हों।
- जिन्होंने पहले शान्तिकुञ्ज में कम से कम एक नौ दिवसीय संजीवनी साधना प्रशिक्षण सत्र सम्पन्न किया हो।
- जिनकी आयु 18 से 40 वर्ष के बीच हो।

आवेदन फॉर्म : इस प्रशिक्षण सत्र में भाग लेने के इच्छुक अभ्यर्थी शान्तिकुञ्ज द्वारा निर्धारित फॉर्म में आवश्यक जानकारियाँ प्रदान करते हुए आवेदन करें।

संपर्क सूत्र : आवेदन फॉर्म प्राप्त करने या अन्य कोई जानकारी के लिए मोबाइल - 74084 29572 (श्री शिवमोहन मिश्रा) पर सम्पर्क कीजिए। अपना आवेदन - **ruralmanagement@dsvv.ac.in** पर भेजें।

आवेदन की अंतिम तिथि - 20 दिसंबर 2025

चयन साक्षात्कार के आधार पर होगा।

साक्षात्कार की तिथि - 23, 24 दिसंबर 2025

नोट : साक्षात्कार में चयनित अभ्यर्थियों को शुल्क ₹ 5000/- (खाना एवं प्रशिक्षण शुल्क छः माह के लिए) देना होगा।

माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा हुई

काशीपुर में निकली कलश यात्रा और 24 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न कराती टोली

काशीपुर। उत्तराखण्ड : दिनांक 5-6 अक्टूबर को गायत्री शक्तिपीठ काशीपुर में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ माँ गायत्री की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा का विशाल समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम संचालन हेतु शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री बालक राम रत्नमुख की टोली ने शरद पूर्णिमा के दिन पूरे विधि-विधान के साथ माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की। इस अवसर पर महापौर दीपक बाली एवं पीसीयू चेयरमैन श्री राम मेहरोत्रा भी उपस्थित रहे। महापौर ने गायत्री परिवार के द्वारा समाज के नैतिक विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शुभारंभ 4 अक्टूबर को विशाल कलश यात्रा के साथ हुआ। प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व 24 घण्टे का अखण्ड जप रखा गया था। कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालुओं की भागीदारी रही। दीक्षा, पुंसवन, विद्यारम्भ एवं अन्य संस्कार करवाए।

आयोजन की सफलता में शक्तिपीठ के संयोजक दिनेश शर्मा, अध्यक्ष हरेन्द्र खाती, भीम सिंह, अमरनाथ मिश्रा, अरुण कुमार सिंह, हरिओम भटनागर एवं अन्य परिजनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

उच्च शिक्षण संस्थानों में वाङ्मय स्थापना

आर.जी.एस. कॉलेज ऑफ फामेर्सी में, अर्णव पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट, सतरिख, बाराबंकी में तथा कल्याण सिंह अति विशिष्ट कैंसर संस्थान, लखनऊ में हुई स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ के द्वारा आर.जी.एस. कॉलेज ऑफ फार्मेसी, इटौंजा में गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती सीमा निरंजन और श्री अनिल कुमार निरंजन के सौजन्य से परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के समस्त खण्डों की स्थापना की गई। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. अविनाश चंद्र त्रिपाठी ने इस पहल के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

29 सितम्बर को मिशन के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री बी.पी. सविता के सौजन्य से अर्णव पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट, सतरिख, बाराबंकी के पुस्तकालय में युगऋषि के समस्त 79 खण्डों की स्थापना हुई। अगली वाङ्मय स्थापना कल्याण सिंह अति विशिष्ट कैंसर संस्थान, सी.जी. सिटी, सुल्तानपुर रोड, लखनऊ के पुस्तकालय में हुई। यह साहित्य गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री सुश्री चाँदनी शर्मा ने अपने मामा स्व. रवि उपाध्याय की स्मृति में भेंट किया।

मूर्ख लोग छोटा-सा कार्य आरम्भ करते हैं और उसी में व्याकुल हो जाते हैं, बुद्धिमान बड़े से बड़ा कार्य कर लेते हैं और निश्चिंत बने रहते हैं। - पंचतंत्र

नवचेतना और उमंग जगाते विविध कार्यक्रम

सेवानिवृत्त हो रहे रेल अधिकारियों से समाजोपयोगी जीवन जीने का आह्वान

नवी मुम्बई। महाराष्ट्र

30 सितम्बर को मुम्बई में रेलवे से सेवा निवृत्त होने वाले 48 अधिकारियों एवं कर्मचारियों का विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। इसे प्रेरणादायी बनाने के लक्ष्य के साथ गायत्री परिवार, मुम्बई के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। नवी मुम्बई उपज़ोन समन्वयक श्री अवधेश वर्मा, शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सोमदेव पटैया, श्री आशीष भट्ट एवं सुनील भोंसले की टोली उनके बीच पहुँची और सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारी, कर्मचारियों को भावी जीवन का सार्थक उपयोग करने की प्रेरणा दी। पूज्य गुरुदेव के सरल सूत्रों के माध्यम से सत्प्रेरणाएँ देते हुए उन्हें अपना शेष जीवन सामाजिक कार्यों में लगाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर एडीशनल डिवीज़नल रेल प्रबंधक, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी तथा अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। सभी ने इस अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण के लिए गायत्री परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया तथा हर माह की अंतिम तारीख को होने वाले सेवा निवृत्ति समारोह में आने का निमंत्रण दिया।

आयोजन में उपस्थित समस्त अधिकारियों तथा सेवा निवृत्त हो रहे 48 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य का सेट भेंट किया गया। उन्हें जीवन को बेहतरीन बनाने के लिए शान्तिकुञ्ज आने और लोकमंगल के लिए जीवन को समर्पित करने का आमंत्रण भी दिया गया।

अधिकारियों के बीच पूज्य गुरुदेव का विचारामृत लेकर पहुँचे गायत्री परिवार के प्रतिनिधि

विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर कार्यशाला

विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन की प्रेरणा दी

दुर्ग। छत्तीसगढ़ : दिनांक 25 सितम्बर, विश्व फार्मासिस्ट दिवस के अवसर पर अपोलो ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, दुर्ग के फार्मेसी विभाग द्वारा 'नशामुक्त युवा' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें फार्मेसी विभाग के 200 से अधिक छात्र-छात्राओं सहित समस्त शिक्षकगण, विभागाध्यक्ष एवं दिया, छत्तीसगढ़ के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

संस्थान के डायरेक्टर श्री मनीष जैन ने फार्मासिस्ट्स को स्वास्थ्य सेवाओं का स्तम्भ कहा, जिनकी समाज को स्वस्थ एवं नशामुक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। दिव्य भारत युवा संघ (दिया) छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संयोजक डॉ. पी.एल. साव ने अपने उद्बोधन में नशे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभावों को विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को नशे से दूर रखकर ही हम स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

दिया के प्रतिनिधियों ने अपोलो ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर को पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय 'चिकित्सा उपचार के विविध आयाम' संस्थान की लाइब्रेरी हेतु भेंट किया।

दिया के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. योगेन्द्र कुमार, इंजीनियर युगल किशोर और रोहन चंद पाण्डेय ने भी कार्यशाला की सफलता में विशिष्ट योगदान दिया।

दुग्धेश्वरनाथ मंदिर पहुँची ज्योति कलश रथयात्रा

रुद्रपुर। उत्तराखण्ड : शान्तिकुञ्ज से जन-जन को शताब्दी वर्ष के आयोजनों का संदेश देने हेतु निकली दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा रुद्रपुर में पौराणिक तीर्थ श्री दुग्धेश्वरनाथ मन्दिर पहुँची। मन्दिर में पीठाधीश्वर महंत रमाशंकर भारती सहित अन्य पुजारी पं. आदित्य पाण्डेय, जनार्दन पाण्डेय, दिनेश गुप्ता, महेश जायसवाल, जितेन्द्र गुप्ता तथा मन्दिर में आए श्रद्धालुओं ने दिव्य ज्योति कलश का दर्शन लाभ प्राप्त करने के उपरांत पूजन-अर्चन किया। समस्त श्रद्धालुओं को दिव्य अखण्ड दीपक एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के जन्म शताब्दी महोत्सव की जानकारी दी गई एवं कार्यक्रम में उपस्थित होने का आमंत्रण भी दिया गया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का सफल आयोजन

जिले में 11580 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी

धमतरी। छत्तीसगढ़

इस वर्ष धमतरी जिले में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन अत्यंत सफल और उत्साहवर्धक रहा। दिनांक 13 अक्टूबर 2025 को आयोजित परीक्षा में कुल 11580 विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें धमतरी ब्लाक से 3413, कुरुद से 2413, मगरलोड से 2039, भखारा से 1519, महाविद्यालय से 289 एवं बाकी अन्य स्थानों से शामिल हुए। परीक्षा के पश्चात् जिला समन्वयक दिलीप नाग, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा के जिला संयोजक प्रदीप देवांगन, सचिव एल.के. यादव, वरिष्ठ परिजन धनवंतरी नाग, राजकुमार साहू, डॉ. रामचंद्र मेश्राम, पुरुषोत्तम निर्मलकर जी ने सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं प्रभारी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

शक्तिपीठ ने मनाया 'स्वच्छोत्सव'

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार रायपुर ने स्वच्छता सेवा पखवाड़े के राष्ट्रीय अभियान को अपने निर्मल गंगा जन अभियान के साथ जोड़ते हुए 5 अक्टूबर को गायत्री शक्तिपीठ समता कॉलोनी के परिसर में साफ सफाई अभियान चलाया। शक्तिपीठ में भी मन्दिर परिसर, यज्ञशाला, भोजनशाला, सभागार एवं नालियों की गहराई से सफाई की गई। इस अवसर पर मुख्य प्रबंध ट्रस्टी ने सबका धन्यवाद करते हुए पूज्य गुरुदेव के जीवन के उदाहरणों के साथ स्वच्छता को आत्मविकास की उत्कृष्ट साधना बताया। उन्होंने स्वच्छता अभियान को घर, मोहल्ले, गाँव, शहर, राज्य एवं पूरे देशभर में फैलाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर दिलेश्वर, श्रद्धा, मेघा, प्रगति एवं मनीषा के द्वारा एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन भी किया गया, जिसके माध्यम से स्थानीय लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। नाटक में यह संदेश दिया गया कि हमें पॉलिथीन एवं अन्य कचरे को कूड़ेदान में ही डालना चाहिए तथा सार्वजनिक स्थलों पर कभी भी थूकना नहीं चाहिए।

आयोजन के अंत में मीडिया प्रभारी श्री प्रज्ञा प्रकाश निगम ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। सभी ने मिल कर युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ किया।

नशामुक्त भारत-डिवाइन वर्कशॉप

सक्ती। छत्तीसगढ़

दिया, छत्तीसगढ़ द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों में डिवाइन वर्कशॉप आयोजित की जा रही हैं। पेंड्रा, जांजगीर चांपा, बिलासपुर, कोरबा, दुर्ग, मुंगेली, रायगढ़, सक्ती इत्यादि जिलों के विद्यालयों में इस प्रकार की वर्कशॉप आयोजित हुई हैं।

26 सितम्बर को सक्ती जिले के निकट ग्राम खैरा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं पोरथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन हुआ, जिसमें 500 से अधिक बच्चों को दिया के प्रतिनिधि कन्हैया चौहान एवं सविता साहू ने नशामुक्त जीवन पर विशेष संदेश प्रदान किया गया तथा आजीवन नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी। दोनों विद्यालयों के छात्रों को नशामुक्ति का संकल्प कराया गया। सभी बच्चों को प्रज्ञा साहित्य का वितरण किया। कार्यक्रम का समापन नशामुक्ति के प्रेरणाप्रद गीतों के माध्यम से हुआ।

नवरात्र साधना अनुष्ठान

35 स्थानों पर सामूहिक साधना अनुष्ठान के कार्यक्रम हुए

पुणे। महाराष्ट्र : अखंड दीप एवं वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के पूर्ववर्ती वर्ष में गायत्री परिवार पुणे के कार्यकत्ताओं ने विशेष उत्साह के साथ नवरात्र पर्व मनाया। इस वर्ष शारदीय नवरात्र के अवसर पर मुंढवा, केशवनगर, हडपसर, पुलगेट, कोथरुड, कोंढवा, बिबेवाड़ी, बाणेर, सांगवी राजगुरुनगर, एरण्डवण, पिपलेगुराव आदि क्षेत्रों में 35 से अधिक घरों में सामूहिक साधना, गायत्री अनुष्ठान एवं यज्ञ के कार्यक्रम आयोजित हुए। अनेकों परिजनों ने वर्ष की प्रत्येक नवरात्र में इस प्रकार के आयोजन करवाने के संकल्प लिए। कार्यक्रम की सफलता में प्रतिभाताई मुले, प्रकाश कोहिनकर, प्रताप भास्कर, माधुरी देशमुख, राधेश्याम यादव, डॉ. योगिता पाटिल, स्वातिताई सोनजे, प्रो. डॉ. ऋषि आचार्य, संध्या पोखरे एवं अनेक गायत्री परिजनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

केरल में विशेष उत्साह

चेतना केन्द्र पर 166 साधकों ने किया सामूहिक साधना अनुष्ठान प्रत्येक साधक ने अखण्ड दीप की स्थापना की

कोचीन। केरल : गायत्री चेतना केन्द्र कोचीन द्वारा समय-समय पर साधनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जीवन साधना के लिए प्रेरित किया जाता रहा है। इससे प्रेरित होकर विगत आश्विन नवरात्र में अखण्ड ज्योति के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में चेतना केन्द्र पर विशेष साधना अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। 166 साधकों ने साधना अनुष्ठान में भाग लिया और चेतना केन्द्र पर नौ दिनों तक सभी ने अपने-अपने अखण्ड दीप प्रज्वलित रखे। इनके समक्ष प्रतिनिधि जप साधना, प्रातः-सायं की विशेष आरती, ध्यान आदि का सामूहिक क्रम सम्पन्न हुआ। 1 अक्टूबर 2025 को अनुष्ठान का समापन एक विशाल यज्ञायोजन एवं कन्या भोजन के साथ सम्पन्न हुआ।

परिजनों में विशेष साधना के लिए ने मनोभाव एवं उमंग जगाने में केंद्र संचालक श्री अशोक अग्रवाल एवं उनकी टीम का योगदान रहा। इस कार्यक्रम में कोचीन-एर्नाकूलम के गुजराती, मारवाड़ी, मराठी, मलयाली, बंगाली, उड़िया, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि एसोसिएशंस के समस्त धर्म प्रेमी भाई-बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

कन्या पूजन के साथ मातृशक्ति की वंदना

बेंगलुरु। कर्नाटक : गायत्री चेतना केन्द्र बेंगलुरु में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने शारदीय नवरात्र साधना अनुष्ठान किया। अनुष्ठान की पूर्णाहुति गायत्री यज्ञ तथा कन्या पूजन के साथ हुई। बहिन अर्पिता ने माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की महिमा के साथ नवरात्र साधना का महत्त्व समझाया। गीता रजक ने युग निर्माण सत्संकल्प को विजयादशमी के साथ जोड़ते हुए कहा कि हमें अपने भीतर की रावण रूपी आसुरी प्रवृत्तियों को मिटा कर सद्गुण रूपी राम को प्रतिष्ठित करना होगा। इस अवसर पर दीक्षा, जन्मदिन, अन्नप्राशन एवं पुंसवन संस्कार भी सम्पन्न किए गए। यज्ञ के समापन पर नवदुर्गा के रूप में कन्याओं का भावपूर्ण पूजन किया गया। यज्ञोपरांत चेतना केन्द्र के मुख्य प्रतिनिधि श्री अश्विनी कटरे जी का जन्मदिन मनाया गया।

बेंगलुरु में ज्योति कलश के सान्निध्य आयोजित नवरात्र साधना का पूर्णाहुति समारोह

दृष्टिबाधित बच्चों का उत्साहवर्धन

मुम्बई। महाराष्ट्र : 1 अक्टूबर को नवरात्र के पावन अवसर पर दीया मुम्बई की टीम श्रीमती कमला मेहता दृष्टिबाधित विद्यालय पहुँची। टीम ने सभी नेत्रहीन बच्चों के साथ गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र का उच्चारण किया, जिसने सभी को सकारात्मकता, उत्साह एवं शान्ति की अनुभूति कराई। दिया सदस्यों के द्वारा सभी के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई। दृष्टिबाधित बच्चों ने प्रेम और अपनत्व की भावना को महसूस किया। बच्चों की आँखों में खुशी और प्रेम झलकता रहा।

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती कोकिला शर्मा, वाराणसी। उत्तर प्रदेश

पिछले दो-तीन दशकों से परिव्राजक धर्म का बड़ी कुशलता और समर्पण भाव के साथ निर्वहन कर रहे वाराणसी के मूल निवासी श्री देवता प्रसाद शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कोकिला शर्मा का 74 वर्ष की अवस्था में दिनांक 5 अक्टूबर 2025 को निधन हो गया। वे अपने पति के साथ सन् 1988 से गुरुकार्य में सक्रिय रहीं। यह दम्पति सन् 2008 से विभिन्न जोनों में पूर्णकालिक समयदान कर रहे हैं।

भाग्य की कल्पना कम बुद्धि वाले मनुष्यों को दुःख के समय पर केवल सान्त्वना देने के लिए ही है, वस्तुतः भाग्य कोई वस्तु नहीं है।

शान्तिकुञ्ज में सृजनशिल्पियों की गढ़ाई-ढलाई

राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविर

समाज और संस्कृति के कुशल शिल्पी होते हैं परिव्राजक - डॉ. चिन्मय जी

शिविर के उद्घाटन सत्र में परिव्राजकों एवं वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के बीच उपस्थित आद. डॉ. चिन्मय जी एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 13 से 15 अक्टूबर 2025 तक की तिथियों में विभिन्न गायत्री शक्तिपीठों पर सेवारत परिव्राजक भाई-बहिनों के लिए राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविर का भव्य आयोजन हुआ। इन तीन दिनों में परिव्राजकों की प्रतिभा एवं श्रद्धा के संवर्धन और जन्मशताब्दी के निमित्त उनके दायित्वों का बोध कराया गया।

शिविर का औपचारिक उद्घाटन 13 अक्टूबर को शान्तिकुञ्ज स्थित रामकृष्ण परमहंस सभागार में गरिमामय समारोह के साथ संपन्न हुआ। देव संस्कृति विश्व विद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी एवं कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परिव्राजकों को समाज और संस्कृति को सही दिशा देकर उसे संरक्षित करने वाले कुशल शिल्पी और सच्चे ब्राह्मण बताया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के आह्वान का पुनःस्मरण कराते हुए कहा कि हर व्यक्ति पर समाज का भारी ऋण होता है। इस ऋण से उऋण होने के लिए हर व्यक्ति को 50 वर्ष की उम्र के बाद अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का बंधन ढीला करते हुए अपने ज्ञान और अनुभव को समाज के बीच जाकर अवश्य बाँटना चाहिए।

तीन दिवसीय शिविर में हुए पुनर्बोध के साथ समस्त प्रतिभागीगण अत्यंत ऊर्जावान अनुभव कर रहे थे।

दिल्ली में प्रशासनिक परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं का दो दिवसीय शिविर

जीवन साधना से उपार्जित आत्मबल व्यक्तित्व और जीवन में सफलताओं का आधार होता है : श्रद्धेया शैल जीजी

प्रतिभागियों ने गंगातट पर की सामूहिक ध्यान साधना

शान्तिकुञ्ज में 12 एवं 13 अक्टूबर को यूपीएससी की तैयारी कर रहे युवाओं का दो दिवसीय विशेष युवा जागरण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें अनेक प्रतिष्ठित कंपनियों के उच्चाधिकारियों सहित वरिष्ठ सरकारी अधिकारी भी शामिल हुए। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें संबोधित करते हुए आत्मिक उत्कर्ष और जीवन में नैतिक संवर्धन की आवश्यकता समझाई। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ कैरियर की ही नहीं, चरित्र निर्माण की भी सोचें। व्यक्ति की सच्ची सम्पत्ति और सफलताओं का मूल चरित्र ही है।

शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ वक्ताओं ने योग, ध्यान, व्यक्तित्व विकास और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया। श्रद्धेया शैल जीजी से मुलाकात के समय उनका विशेष आशीर्वाद मिला।

व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने अपने विदाई संदेश में जन्मशताब्दी वर्ष में उनकी अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आत्मबल सम्पन्न युवा अपने चरित्र, चिंतन को सक्रियता का आधार बनायें तो वे व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

युवा प्रकोष्ठ के समन्वयक श्री के.पी. दुबे ने प्रतिभागियों से व्यक्तित्व और विचारों में निरंतर उत्कृष्टता लाते हुए समाज निर्माण में भागीदार बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति के भीतर देवत्व का बीज विद्यमान है। जब यह बीज जाग्रत् और विकसित होता है, तो समाज में स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। सच्चरित्र, राष्ट्रभक्त, लोकसेवी युवा ही राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल करेंगे।

इस शिविर में आयोजन के प्रमुख सूत्रधार, दिया दिल्ली के समन्वयक श्री मनीष कुमार, श्री विनय पाण्डेय, श्री संदीप पाण्डेय, श्री दिनेश शर्मा, श्री ओंकार शर्मा, श्री गौरव वत्सल, श्री विनय चौरसिया, श्री लोकेश गर्ग, श्री संदीप रजौरिया, श्री अखिलेश पाण्डेय, श्री राजाराम सहित अनेक प्रतिष्ठित युवा शामिल रहे।

अखण्ड ज्योति (द्विमासिक) पत्रिका अब कन्नड़ भाषा में भी

वार्षिक चंदा ₹120/-

परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी 'अखण्ड ज्योति' का हिन्दी के साथ गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, असमिया, बंगला आदि कई भाषाओं में प्रकाशन हो रहा है। जन्मशताब्दी वर्ष में युगचेतना के विस्तार को गति देने के लिए किए जा रहे विशेष प्रयासों के अंतर्गत अब शान्तिकुञ्ज से कन्नड़ भाषा में भी अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हो गया है।

सदस्यता शुल्क शांतिकुंज के निम्न में से किसी एक खाते में जमा कराकर ट्रांजेक्शन प्रूफ ईमेल **south@awgp.org** या व्हॉट्सएप **9258360651** पर भेजकर सदस्यता प्राप्त की जा सकती है।

Account Name - Sri Vedmata Gayatri Trust (TMD)
PNB A/C No. - 4694002100000572 IFSC - PUNB0469400
HDFC A/C No. - 09431450000037 IFSC - HDFC0000943
AXIS A/C No. - 914020031711542 IFSC - UTIB0000156

देसंविवि में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ा विद्यार्थी आलोक कुमार पाण्डेय राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

राष्ट्रपति भवन। नई दिल्ली

माननीया राष्ट्रपति महोदया चि. आलोक पाण्डेय को सम्मान प्रदान करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के श्री आलोक कुमार पाण्डेय को 7 अक्टूबर को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने सम्मानित किया। उन्हें राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सक्रिय स्वयंसेवक की भूमिका में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 'माय भारत-राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्रपति पुरस्कार 2022-23' से सम्मानित किया गया।

श्री आलोक पाण्डेय ने राष्ट्रीय सेवा योजना के एक आदर्श स्वयंसेवक की भूमिका निभाते हुए डिजिटल साक्षरता, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री जीवन बीमा योजना, डिजिटल इंडिया जैसे जन-कल्याणकारी अभियानों के प्रति जन-जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाई है। जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत और स्वच्छता जैसे अभियानों को भी सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया। श्री आलोक ने 710 पौधारोपण कर हरियाली बढ़ाने में योगदान दिया। साथ ही अनेक रक्तदान शिविरों का आयोजन कर समाज को रक्तदान के महत्त्व से अवगत कराया और स्वयं पाँच बार रक्तदान कर सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया।

देसंविवि परिवार की शुभकामनाएँ

देसंविवि के अभिभावकद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैलदीदी, प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन जी सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाने वाले चि.आलोक कुमार को इस शानदार उपलब्धि के लिए शुभाशीष देते हुए उसकी सेवाभावना, अनुशासन एवं समर्पण की भावना की सराहना की। पुरस्कार ग्रहण समारोह में एनएसएस समन्वयक डॉ. उमाकांत इंदोलिया और चि. आलोक के अभिभावक भी उपस्थित रहे।

देव संस्कृति विवि. के विद्यार्थियों की 'सोशियो-टेक यात्रा'

तकनीक, नीति और संस्कृति के प्रेरक अनुभव लेकर लौटे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार (डीएसवीवी) के छात्र-छात्राओं ने ऋषिहुड यूनिवर्सिटी, सोनीपत में आयोजित तीन दिवसीय 'सोशियो-टेक यात्रा' में भाग लिया। 3 से 5 अक्टूबर तक चली इस यात्रा का उद्देश्य युवा पीढ़ी को तकनीकी समझ, नीति-निर्माण की दृष्टि और सांस्कृतिक चेतना के समन्वय से अवगत कराना था।

इस यात्रा के साथ ही डिजाइन थिंकिंग, सिस्टम्स थिंकिंग, ग्लोबल ग्रैंड चैलेंजेज़ और ईकोरिद्म-फीनोलॉजी जैसे नवाचार आधारित सत्रों ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समस्या समाधान और टीमवर्क कौशल को नई दिशा दी। सारंग संगीत तथा फिल्म स्क्रीनिंग ने प्रतिभागियों को सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़ा। विद्यार्थियों को हरियाणा के ऐतिहासिक स्थल राखीगढ़ी का भ्रमण भी कराया गया, जहाँ उन्होंने सिंधु घाटी सभ्यता और भारत की सांस्कृतिक जड़ों को नजदीक से जाना। इस अनुभव ने यह दृष्टिकोण मजबूत किया कि आधुनिक तकनीक और प्राचीन संस्कृति एक-दूसरे के सहयोगी हैं, विरोधी नहीं।

सोशियो-टेक यात्रा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सीख, प्रेरणा और व्यक्तित्व विकास की अनूठी पहल साबित हुई। अपने अनुशासन, सहभागिता और सकारात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि की और यह संदेश दिया कि ज्ञान, संस्कृति और तकनीक का संतुलन ही भविष्य के भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।

गायत्री विद्यापीठ में हुई राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता

विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल प्रमुख आदरणीया शैफाली पण्ड्या जी प्रतियोगिता की प्रथम बाउट का शुभारंभ कराते हुए

गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज में राज्य स्तरीय दो दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में हरिद्वार, देहरादून, ऊधमसिंह नगर और नैनीताल जनपदों से आए 250 पहलवानों ने भाग लिया। मुकाबलों में खिलाड़ियों ने कुश्ती के रोमांचक दांव-पेच दिखाये। कुछ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपने अनुभव और तकनीक से अत्यंत कम समय में मुकाबला जीतकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल प्रमुख आदरणीया शैफाली पण्ड्या जी एवं प्रतियोगिता के संयोजक मुख्य शिक्षा अधिकारी श्री आशुतोष भण्डारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री बृजपाल सिंह राठौर एवं गणमान्यों ने दीप प्रज्वलन कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। शैफाली पण्ड्या जी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए खेलों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और युवाओं को खेल भावना से ओतप्रोत होकर अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन हेतु सांसद डॉ. कल्पना सैनी, गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के अंत में सभी विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार दिये गए।

छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश से आए कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 11 से 13 अक्टूबर 2025 तक की तिथियों में छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश के आए 160 कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों का बाल संस्कार शाला प्रशिक्षण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। युवा प्रकोष्ठ एवं कन्या/किशोर कौशल प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा इसे संचालित किया गया। श्रद्धेया जीजी, आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से प्रेरणा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला।

जिस मनुष्य का मन परमात्मा में लीन है, उसकी रक्षा स्वयं परमात्मा करते है।

यूरोपीय देशों में आस्तिकता और सद्भाव को परिष्कृत करते युगऋषि के विचार

युगावतार परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की प्रखर प्राण चेतना से अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों को अनुप्राणित करते हुए विश्व मानवता को उज्ज्वल भविष्य की ओर प्रशस्त कर रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सितम्बर-अक्टूबर में लगभग 15 दिन के यूरोपीय देशों के प्रवास पर थे। उन्होंने इस प्रवास में 1 से 3 अक्टूबर 2025 की तिथियों में जर्मनी में फ्रैंकफर्ट की संसद में आयोजित **'पीस एंड लीडरशिप कॉन्क्लेव'** में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वे जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड स्थित यूएन मुख्यालय में आयोजित **वैश्विक नैतिकता मंच-2025** के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। इसके अलावा उन्होंने **इंग्लैण्ड, लिथुआनिया, पोलैण्ड** में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया और विशिष्ट गणमान्यों से मुलाकात की। प्रस्तुत है इस प्रवास की गौरवशाली उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण :-

यू.के. में जन्मशताब्दी समारोह की तैयारी

लंदन में आयोजित संगोष्ठी में भाग ले रहे कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

विलेसडेन ग्रीन यूथ सेंटर में युवाओं का पथ प्रदर्शन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

लंदन । यूनाइटेड किंगडम

यूरोप प्रवास का शुभारंभ लंदन से हुआ। नवरात्र के दिनों में लंदन में वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी महोत्सव की तैयारियों को लेकर गायत्री परिवार, यूके के परिजनों की गोष्ठी हुई। परिजनों ने आगामी शताब्दी वर्ष को भव्य, अनुकरणीय और समाज व संस्कृति को नई दिशा देने वाला पर्व बनाने के लिए अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने ज्योति को 'अखंड' से 'प्रचंड' बनाने की प्रेरणा देते हुए शताब्दी महोत्सव को युग निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक अभियान बनाने का आह्वान किया।

ऑनलाइन भागीदारी : इस गोष्ठी के साथ अनेक परिजन ऑनलाइन भी जुड़े और गुरुकार्यों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं समर्पण का भाव व्यक्त किया।

विल्सडेन ग्रीन यूथ सेंटर में उद्बोधन

विल्सडेन ग्रीन यूथ सेंटर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के विचारों के संग क्रान्तिकारी संदेश देते हुए श्रोताओं को गायत्री उपासना के अवलम्बन से जीवन को धन्य बनाने की प्रेरणा दी। यह आयोजन साधकों के जीवन में नई ऊर्जा, आत्मबल एवं आध्यात्मिक प्रगति का संचार करने वाला सिद्ध हुआ।

DOLMED.Tech 1-3 X 2025 KARPACZ

यूरोप का सबसे बड़ा चिकित्सा सम्मेलन

अखिल विश्व गायत्री परिवार को मिला अभूतपूर्व सम्मान

उद्घाटन पैनल में पहली बार किसी भारतीय ने मंच साझा किया

डॉ. चिन्मय जी प्रतिष्ठित डोलमेड टेक सम्मेलन को संबोधित करते हुए

विशिष्ट गणमान्यों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया

1 से 3 अक्टूबर 2025 की तिथियों में पोलैण्ड के सुरम्य नगर कर्पाच में यूरोप का सबसे बड़ा चिकित्सा सम्मेलन DOLMED.Tech 2025 आयोजित हुआ। डोलमेड टेक के इस चौथे सम्मेलन में पोलैंड के स्वास्थ्य मंत्री सहित अनेक प्रतिष्ठित गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। पहली बार इस ऐतिहासिक सम्मेलन के उद्घाटन पैनल में किसी भारतीय प्रतिनिधि को सम्मिलित किया गया। यह गौरवशाली अवसर देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को प्राप्त हुआ।

> आज विश्व को वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आवश्यकता है और यही दृष्टिकोण देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित सेवाओं का आधार है।
> - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने 'युद्धकाल में चिकित्सा एवं सैन्य खतरों के लिए स्वास्थ्य सेवा' विषय पर आयोजित उच्च स्तरीय सत्र में यूक्रेन के ओलेक्सिज व्लासोव (महानिदेशक, रीजनल मेडिकल सेंटर फॉर फैमिली हेल्थ) तथा ओलेना कोरपुसेन्को (महानिदेशक, दिनप्रोपेट्रोव्स्क रीजनल रिहैबिलिटेशन सेंटर) जैसे वैश्विक विशेषज्ञों के साथ मंच साझा किया। भारत की प्रज्ञा एवं नेतृत्व को यूरोप के सबसे बड़े चिकित्सा नवाचार मंच पर सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। वास्तव में यह एक ऐतिहासिक क्षण था। इस सम्मेलन में विश्वभर से आए हुए विशिष्ट नेता, नीति-निर्माता एवं विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

माननीय प्रति कुलपति जी ने कहा कि वैज्ञानिक प्रगति को मानवीय मूल्यों के साथ समन्वित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज विश्व को वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आवश्यकता है और यही दृष्टिकोण देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित सेवाओं का आधार है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने फोरम के अध्यक्ष एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों को भेंट स्वरूप पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का वाङ्मय प्रदान किया। उन्होंने विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं के साथ स्वास्थ्य सेवा, नवाचार और टिकाऊ समाधानों पर परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के चिंतन को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने के लिए आयोजकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

लिथुआनिया के साथ शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक संबंधों को सुदृढ़ करते विविध आयोजन

यज्ञ में प्रवाहित हुई दिव्य धाराएँ

लिथुआनिया की राजधानी विल्नियस में स्थानीय श्रद्धालुजनों एवं भारतीय मूल के परिजनों के बीच आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। वेद मंत्रों और सामूहिक प्रार्थनाओं के बीच भारतीय संस्कृति की पावन परंपराओं और पूज्य गुरुदेव की प्रेरणाओं की दिव्य और प्रेरक धाराएँ प्रवाहित होती रहीं। याजकों ने आत्मिक शुद्धि, पारिवारिक समृद्धि, राष्ट्रोत्थान एवं विश्व कल्याण के लिए सक्रियता के संकल्प लिए।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के साथ विल्नियस में आयोजित गायत्री यज्ञ में भाग ले रहे स्थानीय एवं भारतीय मूल के श्रद्धालु

एक महत्त्वपूर्ण मुलाकात

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विल्नियस कोलेगिया में डॉ. जोलांता प्रिएडिएने, अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रमुख तथा वाइस रेक्टर डॉ. निजोले जिन्केविचिएने से भेंटवार्ता हुई। यह वार्ता अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है।

डॉ. जोलांता प्रिएडिएने एवं डॉ. निजोले जिन्केविचिएने से भेंट के बहुमूल्य क्षण

भारतीय राजदूत श्री देवेश उत्तम जी के संग

भारतीय राजदूत से दोनों देशों के बीच शैक्षणिक, सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई

माननीय प्रति कुलपति जी लिथुआनिया की राजधानी विल्नियस में भारत के राजदूत श्री देवेश उत्तम जी से मिलने गए। दोनों के बीच सर्वहितकारी देव संस्कृति, सनातन ज्ञान सम्पदा, अध्यात्म एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार विनिमय हुआ। दोनों देशों के बीच शैक्षणिक आदान-प्रदान तथा नवोन्मेषी अवसरों को प्रोत्साहित करने की दिशा में सार्थक सहयोग के प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के साथ भारतीय राजदूत के साथ हुई महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। भारतीय राजदूत को अगले वर्ष आयोजित होने वाले जन्मशताब्दी समारोह में भागीदारी का आमंत्रण भी दिया।

कर्पाच में नगर महापौर ने भव्य स्वागत किया

जन्मशताब्दी महोत्सव का आमंत्रण स्वीकारा

कर्पाच। पोलैंड

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पोलैंड के सुरम्य नगर कर्पाच पहुँचे। वहाँ नगर के महापौर माननीय श्री रादोस्लाव येंसेक ने उनका अत्यंत आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया। डॉ. पण्ड्या जी को नगर की ओर से एक स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने इसे गायत्री परिवार के शाश्वत मूल्यों के प्रति विश्व में बढ़ते सम्मान का प्रतीक बताया।

महापौर श्री येंसेक के साथ पूज्य गुरुदेव के जीवन-दर्शन, उनके विचार तथा सिद्धांतों के साथ आगामी वर्ष में होने जा रहे जन्मशताब्दी समारोह के कार्यक्रमों पर चर्चा हुई। श्री येंसेक ने इस ऐतिहासिक आयोजन में नगर के प्रतिनिधिमंडल के साथ भाग लेने का आश्वासन दिया है।

बायें महापौर माननीय श्री रादोस्लाव येंसेक और दायें पादरी फादर बर्नार्ड को युग साहित्य भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

मुख्य पादरी से मुलाकात : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कर्पाच के मुख्य पादरी फादर बर्नार्ड से भेंट की। दोनों के बीच सौहार्द्रपूर्ण एवं सारगर्भित चर्चा हुई।

भारतीय ध्यान केन्द्र में : कर्पाच स्थित भारतीय ध्यान केंद्र विभिन्न देशों से आने वाले साधकों को ध्यान साधना की शिक्षा प्रदान करता है। यह केंद्र आध्यात्मिक शिक्षण एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सेतु है, जो ध्यान की सार्वभौमिकता तथा विविध समुदायों पर उसके जीवन-परिवर्तनकारी प्रभाव को अभिव्यक्त करता है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस केन्द्र का निरीक्षण किया।

मायकोलास रोमेरिस विश्वविद्यालय के साथ एमओयू

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और मायकोलास रोमेरिस विश्वविद्यालय, विल्नियस (लिथुआनिया) के साथ एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ। इस अवसर पर एमआरयू के उप कुलपति डॉ. एग्ले मलीनाउसकिएने, अंतरराष्ट्रीय साझेदारी विभाग की अध्यक्षा डॉ. अलीना युस्किएने तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध विभागाध्यक्ष डॉ. ऑड्रा बुरोकिएने जैसे विशिष्ट गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। यह अनुबंध दोनों विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए शोधकार्य, सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन जैसे कार्यों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

शुभ दृष्टि मनुष्य को सार्थक जीवन की ओर प्रेरित करती है। अशुभदर्शी होना ही निर्बलता है।

यूएन मुख्यालय में हुए वैश्विक नैतिकता मंच-2025 सम्मेलन में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी

नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना ही है विश्व शांति की नींव : माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या

- 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधि शामिल।
- उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी।
- विश्व के विद्वानों ने माना कि भारत केवल एक देश नहीं, एक विचार है, जो समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है।

जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड में आयोजित विश्व सम्मेलन में भाग ले रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

सच्चा शासन संसदों में नहीं, मानव-हृदयों में जन्म लेता है। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

जिनेवा स्थित यूएन मुख्यालय में वैश्विक नैतिकता मंच-2025 आयोजित हुआ। 'उत्तरदायी शासन का पुनर्निर्माण : दुविधाओं, शक्ति और उद्देश्य का समाधान' विषय पर केंद्रित इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके उद्घाटन सत्र में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत की सनातन परंपरा पर आधारित शासन और नेतृत्व की उस अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें नीति और अध्यात्म, सत्ता और संवेदना एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। उन्होंने कहा कि सच्चा शासन संसदों में नहीं, मानव-हृदयों में जन्म लेता है। जब नेतृत्व मूल्यों से संचालित होता है, तभी नीतियाँ समाज को शांति के पथ पर ले जाती हैं। शासन की हर दिशा में अध्यात्म और नैतिकता का समावेश आवश्यक है, तभी मानवता की दिशा सुधरेगी। नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना ही शासन को जनकल्याण का माध्यम बनाती है और यही विश्व-शांति की नींव है।

माननीय डॉ. पण्ड्या जी ने युगद्रष्टा परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का दर्शन बताते हुए समस्त विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के विकास को वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवता के लिए सबसे प्रभावी संदेश और वैश्विक अशांति का सर्वोत्तम समाधान बताया।

आध्यात्मिक पुनर्जागरण का आह्वान

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस विश्व सम्मेलन में अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष 2026 का उल्लेख किया। उन्होंने सभी देशों के प्रतिनिधियों से जन्मशताब्दी वर्ष में वैश्विक एकता, आत्मपरिवर्तन और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का आह्वान किया। सभी ने इसे पूरे मनोयोग से सुना, इन विचारों की सराहना की और आभार व्यक्त किया।

विश्व के गणमान्य प्रतिभागीगण

इस दौरान ग्लोबएथिक्स के अध्यक्ष डॉ. डिट्रिच वर्नर, कार्यकारी निदेशक फादी दाऊ, उपाध्यक्ष एवं शैक्षणिक समिति की अध्यक्षा प्रो. दिव्या सिंह, डॉ. डिकी सोफजान, स्विट्जरलैंड के कोरिन मोमल-वेनियन, माइकल वीनर, स्पेन के कार्लोस अल्वारेज पेरेरा, सारा मार्किविज, अंडा फिलिप निदेशक-सदस्य संसद एवं बाह्य संबंध, जर्मनी की टेरेसा बर्गमैन, यूनाइटेड किंगडम के एलिसन हिलियर्ड, ग्लोबएथिक्स एवं यूनेस्को संस्थान बोर्ड के सदस्य आशा सिंह कंवर सहित अमेरिका, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के प्रतिनिधि शामिल रहे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने विशिष्ट अतिथियों एवं प्रतिनिधियों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रतीक एवं युगसाहित्य भेंट किया।

अंतर संसदीय संघ के मुख्यालय में विशिष्ट महानुभावों से वार्ता

जीवन मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के प्रोत्साहन पर संवाद हुआ

जिनेवा। स्विट्जरलैण्ड

जिनेमा में अंतर संसदीय संघ का मुख्यालय भवन तथा डॉ. एंडी विलियमसन और डॉ. सारा मार्कीविक्ज से मुलाकात करते आद. डॉ. चिन्मय जी

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की अंतर संसदीय संघ (आईपीयू) के मुख्यालय में वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. एंडी विलियमसन और वरिष्ठ सलाहकार एवं परामर्शदाता डॉ. सारा मार्कीविक्ज के साथ एक वार्ता हुई। चर्चा आधुनिक युग की प्रमुख चुनौतियों, जैसे वैश्विक शांति, नैतिक नेतृत्व, अंतर-सांस्कृतिक सहयोग तथा मानवता को सतत एवं समावेशी प्रगति की ओर ले जाने में आध्यात्मिकता की भूमिका पर केन्द्रित रही। बड़ा सार्थक और प्रभावशाली संवाद हुआ। जीवन मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित मानवता के भविष्य के निर्माण के लिए विज्ञान, अध्यात्म और शासन के बीच समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता अनुभव की। दोनों पक्षों ने भौगोलिक सीमाओं से परे पारस्परिक सम्मान, संवाद और साझा जिम्मेदारी पर आधारित एक वैश्विक समुदाय के निर्माण हेतु सहयोगात्मक प्रयास किये जाने पर बल दिया।

फ्रैंकफर्ट में भव्य स्वागत, नगर सांसद के घर गायत्री यज्ञ

फ्रैंकफर्ट। जर्मनी : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी फ्रैंकफर्ट में आयोजित पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे थे। माननीय नगर संसद सदस्य श्री राहुल कुमार जी ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने डॉ. चिन्मय जी को अपने आवास पर आमंत्रित कर गायत्री यज्ञ भी सम्पन्न कराया, जिसमें उनका पूरा परिवार शामिल हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें यज्ञ का दर्शन समझाते हुए कहा कि यज्ञ एक सनातन वैदिक परंपरा है। यह न केवल व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम है, बल्कि शांति, सद्भाव और सर्वजन कल्याण हेतु एक सामूहिक प्रार्थना भी है।

यज्ञ में उपस्थित माननीय श्री राहुल कुमार जी का परिवार

डॉ. चिन्मय जी ने नगर संसद सदस्य को पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन लक्ष्य-मानवजाति में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण समझाते हुए गायत्री और यज्ञ को इस लक्ष्य को चरितार्थ करने का विधान बताया।

श्री राहुल कुमार जी ने विश्व शांति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हो रही पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ. चिन्मय जी ने उनके इन मानवतावादी प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया। इस सम्मेलन में माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या के मार्गदर्शन में वैश्विक सद्भाव और सतत विकास के लिए शिक्षा, प्रौद्योगिकी और आध्यात्मिकता को एकीकृत करने के दृष्टिकोण को बड़ी खूबसूरती से प्रतिबिंबित किया।

जर्मनी की संसद में 'पीस एंड लीडरशिप कॉन्क्लेव'

डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने किया भारत का प्रतिनिधित्व

युगऋषि के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को समस्त वैश्विक समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव, फ्रैंकफर्ट में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का सम्मान और उद्बोधन देते डॉ. चिन्मय जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने यूरोप प्रवास में फ्रैंकफर्ट स्थित जर्मनी की संसद में आयोजित 'पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव' में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे थे। इस सम्मेलन में माननीय डॉ. चिन्मय जी ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्व-यज्ञ, तप, सेवा और सद्भाव को विश्व शांति और नेतृत्व के लिए समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय जब विश्व युद्ध, जलवायु संकट, मानसिक तनाव और सामाजिक विघटन जैसी अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे में भारत का शाश्वत दृष्टिकोण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विस्तार ही है विश्व की समस्त समस्याओं का व्यावहारिक समाधान। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यश्री ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय से एक ऐसे नवयुग की नींव रखी है, जो आत्मविकास, नैतिक उत्थान और वैश्विक शांति पर आधारित है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष में गायत्री परिवार द्वारा वैश्विक एकता, आत्म परिवर्तन एवं आध्यात्मिक नवजागरण को समर्पित भव्य अंतरराष्ट्रीय आयोजन किए जाने की घोषणा की।

इस सम्मेलन में श्रीमती शुचिता किशोर-कौंसुलेट जनरल ऑफ इंडिया फ्रैंकफर्ट, सुश्री उसुर्ला बुश-चेयरवुमन पार्लियामेंटरी बोर्ड एसपीडी-सिटी ऑफ फ्रैंकफर्ट, प्रो. अजीत सिकंद-जोहान गुटेनबर्ग यूनिवर्सिटी, सुश्री कृति कुमार-काउंसलर सिटी केल्स्टरबाक, श्री राहुल कुमार-सांसद, श्री जॉय एडविन थनाराजा सहित विश्व के अनेक राजनयिक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद् एवं सामाजिक नेतृत्वकर्ता उपस्थित रहे। उन सभी ने माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने भी सभी को शान्तिकुञ्ज का स्मृति चिह्न, युग साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया।

जर्मनी की संसद में गायत्री महामंत्र की गूँज, एक अद्भुत घटना

यह 16वीं शताब्दी में निर्मित संसद है। माननीय डॉ. चिन्मय जी के उद्बोधन के साथ इस ऐतिहासिक संसद भवन में पहली बार गायत्री महामंत्र की दिव्य ध्वनि गूँजी। यह ऐसा क्षण था, जिसे जर्मनी के प्रमुख समाचार पत्रों सहित मीडिया हाऊसों ने प्रमुखता से स्थान दिया। मीडिया ने इसे एक अद्भुत और रोमांचक पल बताया। गायत्री मंत्र के उच्चारण ने न केवल भारतीय संस्कृति का सम्मान बढ़ाया, बल्कि वहाँ उपस्थित सभी प्रतिभागियों के हृदयों को भी गहराई से छुआ। एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति हुई, मानो माँ गायत्री स्वयं वहाँ उपस्थित होकर सभी को आशीर्वाद दे रही हों।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.10.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26